चौखट पार करती स्त्री

सुसा राणा

जब लड़की ब्याह कर जाती है, एक घर जो उसका अपना था उसे पता चला कि वह घर तो उसका है ही नहीं। उसका घर तो कहीं और है, कहां है? कैसा है? किसी को नहीं पता। बस बातें करते रहते हैं कि इस बार चम्पा अपनी घर चली जायेगी।

चौखट के इस पार रहते माता- पिता के नींद उड़े रहते हैं एक आँख खुली रख सोते हैं ओर पहरा देते हैं। दादी नानी बड़ी होती लड़कियों को सीखा जाती है इनको क्या करना है क्या नहीं करना है। पूरी कपड़े पहना, कम बोला, ठहाके मारके नहीं हंसना, चौका - बर्तन करना, घर में रहना, लड़कों के साथ नहीं खेलना, आदि आदि।बाबुल के बाग में बेटियों को स्वच्छंद बढ़ने कहां दी जाती , उस पर एक माली बैठा दिया जाता है जो हर पल निगरानी रखता है,बाग में किस पौधे को कितना बढ़ना है,कैसे दिखना है,ये सब तैय करता है माली।

"माता-पिता में यह शीत युद्ध छिड़ा रहता लड़की जात है उम्र भी खिसकता जाए इस बार एक अच्छा सा घर देखकर चम्पा की ब्याह हो जाए,तो इस करतब (कर्तव्य) से मुक्ति मिले"

"इतने परिश्रम के बाद पिता ने मेरे लिए वर ढूंढ ही लिया"

ब्याह तैय हुआ, मुहूर्त निकाली गई, कार्ड बांटे गए।

"मेहमानों का आना - जाना शुरू हो गया,माता - पिता में एक चुप्पी थी या कहें उदासी"

इनको बड़ी पड़ी थी मेरी शादी कराने की ,अब -जब मेरी शादी हो ही रही तब पर भी उदासी।"

"अभी मेरी उम्र ही क्या थी जो हाथ पीले कर दिये जा रहे" कहती चम्पा रो पड़ती है।

"चम्पा कब तक रोती रहेगी तुम एकली नहीं हो इस दुनिया में जो ब्याह कर जा रही ..." बुआ ने कहा

"कितना तैय हुआ है।" प्रश्न भरे आंखों से चम्पा ने कहा।

क्या ?

"मेरे माता - पिता की आजादी का , उनके पैरों पर बंधे बेड़ी से मुक्ति का।"

चम्पा की बातें सुन बुआ विस्मृत हो निः शब्द मौन चम्पा को देखती रही जैसे उन्हें अपना विवाह याद आ गया हो, कितना बीघा ज़मीन बिका था इस चौखट को पर कर उस चौखट के अंदर जाने में।

बुआ...बुआ....?

बुआ उस विषाद पल को याद करती अचानक सपने से जागी घबराई मुद्रा में। फिर स्वतः आंखों व पलकों में भरी नीर रेगिस्तान के किसी कुएं का सा सूख गया।

एक प्रश्न जो उत्तर की चाह में किया गया वह भटकता रहा पर उसे अंत तक नहीं मिला कोई उत्तर।

प्रश्न प्रश्न ही रहा गया।

"मैंने सुना था माता -पिता को जमीन की बातें करते।"